राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **कीदृगयं व्यामोहो, जन-धन-काल-श्रम शक्ति-विध्वंसकः ।**
किं मानवदेहोऽयं, मिलित एतन्निकृष्टकार्य - करणार्थम् ? ॥71॥

जन, धन, काल, श्रम और शक्ति को विध्वस्त करने वाला राष्ट्र के शासकों का यह कैसा व्यामोह है ? क्या उनको यह मानव-शरीर इन निकृष्ट कार्यों को करने के लिए मिला है ?

Which kind of confusion is this that rulers destroy the people, money, time, work and power? Did they get this human body for such abominable work?

लङ्का-नाशेऽपि हेतु, रभूत् तच्छासक-रावण-दुर्दृढ एव ।
श्रीरामेण न योद्धुं , रावणं कः कः प्रबोधितवान् न जनः ? ॥72॥

लङ्का के विनाश में भी उसके शासनकर्ता रावण का दुर्दृढ़ ही कारण बना था। श्रीराम से युद्ध नहीं करने के लिए किस किस ने रावण को नहीं समझाया था ?

Lanka's fall was due to the weakness of its ruler Ravana. Who all did not explain to Ravana not to go to war with Rama? (so many people tried to convince Ravana not to fight Rama)

परं स्वार्थ- साधनेच्छु, रसौ रावणो न कस्यापि मेने वार्त्ताम् ।
अन्ते तत्फलमवापि , सर्वयापि लङ्कावासि - जनतया ॥73॥

परन्तु स्वार्थ साधने का इच्छुक बने हुए उस रावण ने किसी की भी बात नहीं मानी, अन्त में उसका फल सारी लङ्कावासी जनता ने पाया।

But because of selfish reasons Ravana did not listen to anybody and in the end its fruits the people of Lanka had to bear.

अतो ब्रूमो युद्धस्य , प्रमुख-हेतू राष्ट्रस्य शासका एव ।
अतः शासनीयाः प्राक्, शासका एव जनताद्वारा स्वीयाः ॥74॥

इसलिए हे गुरुदेव ! हम कहते हैं कि युद्ध का प्रमुख कारण राष्ट्र के शासक ही होते हैं, अतः जनता द्वारा प्रथम अपने शासकों को ही शासित करना चाहिए।

O Gurudev! It is in our opinion that the ruler is the main reason for the war. Therefore, firstly people should rule their rulers.

जात्याधृतारक्षणं, राष्ट्रैकतां भनक्तीति सर्व-विदितम् ।
नेतृभिः सह जनतया, किं नेदमारक्षणं समुन्मूल्यते ? ॥75॥

यह सर्वविदित है, कि जाति को आधार बना कर किया गया आरक्षण राष्ट्र की एकता को भङ्ग कर देता है, अतः नेताओं के साथ जनता द्वारा यह जाति पर आधारित किया जाने वाला आरक्षण क्यों नहीं उन्मूलित कर दिया जाता ?

It is proven that reservation on the base of the caste divides the country, therefore why don't the politicians unite with the people and abolish it? |75|

सवर्णेष्वसवर्णेषु , जात एव द्वेषो राष्ट्रैक्यशत्रुः ।
यज्जातं तज्जातं, भविष्ये त्विदमारक्षणं रोद्धव्यम् ॥76॥

सवर्णों और असवर्णों में इस प्रकार जाति को आधार बना कर किये जाने वाले आरक्षण से उत्पन्न हुआ द्वेष राष्ट्र की एकता का शत्रु बन गया है। अब तक जो हुआ वह हुआ, पर भविष्य में तो यह आरक्षण बन्द कर दिया जाना चाहिए ।

A resentment is created in the country by the reservation based on the creamy and non-creamy castes, which destroys the unity. What was done was done, but in the future reservation should be abolished.

(क्रमशः)